IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

भारतीय ज्ञान परंपरा और राम काव्यधारा

डॉ. अल्पना मिश्रा

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग,

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा एक प्राचीन और समृद्ध विरासत है जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों और महाकाव्यों से विकसित हुई है। यह परंपरा आत्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक ज्ञान का स्रोत रही है, जिसमें राम काव्यधारा एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में उभरती है। राम काव्यधारा, जो महर्षि वाल्मीकि की रामायण से प्रारंभ होती है, भक्ति आंदोलन के माध्यम से मध्यकाल में चरमोत्कर्ष पर पहुंची। इस धारा में राम को परमात्मा के अवतार के रूप में चित्रित किया गया है, और यह भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जुड़कर नैतिकता, धर्म, और भक्ति के मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण किया गया है, जैसे वेदों में निहित ज्ञान, उपनिषदों की आत्म-चेतना, और रामायण की शिक्षाएं। राम काव्यधारा के संदर्भ में तुलसीदास, रामानंद और अन्य कवियों के योगदान पर चर्चा की गई है, जो राम भक्ति को जनमानस तक पहुंचाने में सफल रहे। शोध में द्वितीयक स्रोतों, जैसे साहित्यिक ग्रंथों और ऐतिहासिक विश्लेषणों का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में यह स्थापित किया गया है कि राम काव्यधारा भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है, जो आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है। यह परंपरा सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देती है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30199

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, April 2025
Impact Factor: 7.67

कीवर्ड्स

भारतीय ज्ञान परंपरा, राम काव्यधारा, रामायण, भक्ति आंदोलन, तुलसीदास, राम भक्ति, वेद, उपनिषद, रामचरितमानस, आध्यात्मिक विकास।